SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोरोना सेंट्रिक विश्व और भारत

रामदेव भारद्वाज, कुलपति,
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
रामदेव भारद्वाज, कुलपति,
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/05/2020
Revised on : -----
Accepted on : 25/05/2020
Plagiarism : 1% on 18/05/2020

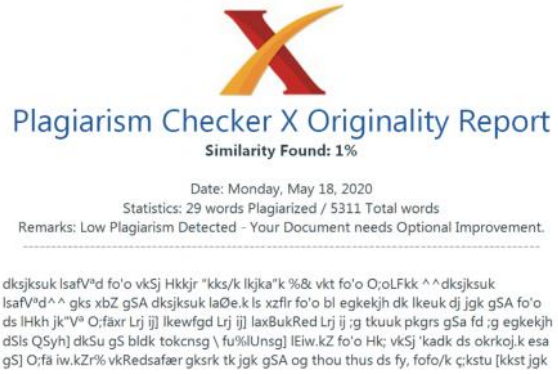

शोध सारांश :–

आज विश्व व्यवस्था ''कोरोना सेंट्रिक'' हो गई है। कोरोना संक्रमण से ग्रसित विश्व इस महामारी का सामना कर रहा है। विश्व के सभी राष्ट्र व्यक्तिगत स्तर पर, सामूहिक स्तर पर, संगठनात्मक स्तर पर यह जानना चाहते हैं कि यह महामारी कैसे फैली, कौन है इसका जवाबदेह ? निःसन्देह, सम्पूर्ण विश्व भय और शंका के वातावरण में है, व्यक्ति पूर्णतः आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। वह जीवन जीने के लिए विविध प्रयोजन खोज रहा है, स्वयं के स्तर पर और समाज, राष्ट्र एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी।

वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वायरोलॉजी – WIV की स्थापना क्यों की गई? वुहान की लैब का अमेरिकी, फ्रांस से क्या सबन्ध रहा है? अमरीका ने WIV को आर्थिक मदद क्यों की? चीन की चिनबू परम्परा क्या है और इस परम्परा का कोरोना संक्रमण से क्या सबंध है ? क्या है चमगादड़–पेंगोलिन थ्योरी ?

WIV में जैव सुरक्षा मानक क्या है और क्या उनका पालन होता है? इस प्रकार के बदले परिदृश्य में भारत की भूमिका क्या है?

मुख्य शब्द :–

कोरोना सेंट्रिक, WIV, महामारी, संक्रमण, सुरक्षा भूमिका।

प्रस्तावना :–

व्यक्ति की जीवन शैली, उसका सोच–विचार, रहन–सहन, समय और परिस्थितियों के कारण परिवर्तित हो रही है। स्वयं के प्रति व्यक्ति की सोच और जीवन दृष्टि बदल रही है। जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र स्वयं को असीमित अक्षुण्ण क्षमताओं और शक्ति का श्रोत एवं अधिपति मानता था, आज वह जीवन

में जिंदा रहने के लिए मुहताज है। उसे पता नहीं कब और किस क्षण, किस रूप में मृत्यु उसमें प्रवेश कर जाएगी। व्यक्ति सभी को सन्देह और भ्रम की दृष्टि से देखने लगा है और सम्पूर्ण विश्व उन्मुक्त भाव में निश्चल, निर्भय विचरण करने वाला व्यक्ति आज घर की चार दीवारी में स्वयं सीमित हो गया है। ऐसा किसने सोच था, कैसा समय आया है ? सब एक दूसरे को दोषी मान रहे हैं, अनेकों कारण खोजे जा रहे हैं, स्वयं तो भयभीत है ही साथ ही दूसरे अन्य भी भयाक्रांत है। लेकिन विडम्बना तो यह है कि अभी भी हम आत्म विशेषण नहीं कर रहे, नहीं करना चाहते। क्योंकि इन परिस्थितियों में हममें स्वयं अथवा अन्य के उत्तरदायित्व की विवेचना करने का समर्थ नहीं है। व्यक्ति टूटा हुआ, असहाय, हतास, निरीह, पतझड़ में सूखे पत्तों की तरह स्वयं को और अन्य व्यक्तियों को टूटता हुआ, झड़ता हुआ, मरता देख रहा है। कई देश तो ऐसे हैं जो अपने मृत व्यक्तियों, नागरिकों के शवों की गिनती भी नहीं कर पा रहे हैं, उनको दफन करने के लिए स्थान तक नहीं है। कोई भी मृत व्यक्ति को स्पर्श नहीं करना चाहता है, मृतक से दूरी बनाकर रहना चाहता है। इतना ही नहीं, यहां तक कि व्यक्ति के रक्त सम्बन्धी, बन्धु–बान्धव भी मृत व्यक्ति के शव को नहीं लेना चाहते, और देखना भी नहीं चाहते। कैसा युग है, कैसा दौर है ? वास्तविकता में बदल रहा है जीवन। ये कैसे हो गया ? कोई न कोई तो इसका उत्तरदायी है।

पूरा विश्व कोरोना महामारी के लिए चीन को दोषी मान रहा है। कहा जा रहा है की चीन ने कोरोना वायरस को वुहान की प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से निर्माण किया है। चीन इस वायरस के रोकथाम को भी जनता है। चीन ने कोरोना का टीका बनाने पर भी शोध कर लिया है। इसको लेकर चीन पर प्रश्न उठ रहे हैं? प्रश्न उठता है कि चीन कोरोना संक्रमण के लिए कैसे उत्तरदायी है ? कोरोना के संबंध में वुहान की बैटवुमन के नाम से विख्यात शी झेंगली की क्या थी चेतावनी ? क्या वुहान की लैब–WIV सुरक्षित नहीं है ? और क्या है मोदी की अंतरराष्ट्रीय कोरोना नीति? इस सभी विषयों की समग्र विवेचना का एक विनम्र प्रयास प्रस्तुत आलेख में किया गया है।

वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वायरोलॉजी – WIV :–

विश्व के लिए कहर बने कोरोना वायरस को लेकर सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर यह आया कहां से ? इस सवाल के जवाब में उंगलियां चीन और वहां के 64 साल पुरानी प्रतिष्ठित संस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी की ओर उठ रही है? यह भी प्रश्न पैदा हुआ है कि वुहान से फैल वायरस के लिए असली जवाबदेही किसकी है, चीन की? अथवा अमरीका की? क्योंकि चीन जितना जिम्मेदार है, अमेरिका भी कहीं कम नहीं? क्योंकि वुहान के जैव अनुसन्धान संस्थान में जो शोध कार्य होता था उसको आर्थिक अनुदान

अमेरिका भी देता था। इस प्रकार चीन और अमेरिका की जुड़ी हुई कड़ियाँ, वैज्ञानिक शोध संबंध को समझे बिना वस्तुस्थिति समझना सम्भव नहीं है। चीन ने यह तो स्वीकार किया है कि कोरोना वायरस सी फूड मार्केट से नहीं अपितु WIV से आया है क्योंकि सी फूड मार्केट WIV से 32 किलोमीटर दूर है। अमेरिका अपने इस कथन पर दृढ़ है कि कोरोना के पीछे चीन की लापरवाही है। अमेरिका के पास इसके पुख्ता प्रमाण है। चीनी विज्ञान अकादमी की विषाणु विज्ञान वुहान संस्थान (Wuhan Institute of Virology) की स्थापना WIV की स्थापना 2015 में हुई। WIV की स्थापना 1956 में वुहान माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला के रूप में चीनी विज्ञान अकादमी– (CAS) के तहत हुई थी। 1961 में, यह दक्षिण चीन इंस्टीट्यूट ऑफ माइक्रोबायोलॉजी बन गया, और 1962 में इसका नाम वुहान माइक्रोबायोलॉजी संस्थान रखा गया। 1970 में, यह हुबेई प्रांत का माइक्रोबायोलॉजी इंस्टीट्यूट बन गया, जब हुबेई कमीशन ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी ने प्रशासन को

संभाला। जून 1978 में, इस कैस को वापस कर दिया गया और इसका नाम बदलकर वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी रखा गया।

2015 में, WIV की राष्ट्रीय जैव–सुरक्षा प्रयोगशाला को फ्रांस सरकार की CIRI प्रयोगशाला के सहयोग से 3,000 स्क्वायर मीटर के क्षेत्रफल में फैले WIV का निर्माण मिलियन युआ 300 मिलियन युआन (44 मिलियन डॉलर) की लागत से पूरा किया गया था। यह चीन में निर्मित होने वाली पहली जैव सुरक्षा स्तर 4 (BSL–4) प्रयोगशाला थी। 2018 में ये बनकर तैयार हुई WIV के निर्माण में फ्रांसीसी जैव–औद्योगिक फर्म के संस्थापक, एलेन मेरीक्स ने खास योगदान दिया है। संस्थान में एक P3 प्रयोगशाला भी है जो 2012 से परिचालन में है। WIV को अमेरिकी सरकार द्वारा आंशिक रूप से वित्त पोषित किया गया था। प्रयोगशाला का टेक्सास विश्वविद्यालय में गैल्वेस्टोन राष्ट्रीय प्रयोगशाला से मजबूत संबंध है। इनके भी साथ मजबूत संबंध था कनाडा के राष्ट्रीय सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला जब तक WIC स्टाफ वैज्ञानिकों Xiangguo और उसके पति Keding चेंग, जो भी कनाडा की सरकार द्वारा वेतन प्राप्त कर रहे थे 2019 जुलाई में अज्ञात कारणों के लिए कनाडा के प्रयोगशाला से ले रहे थे ।

WIC एशिया का सबसे बड़ा वायरस बैंक भी है। यहां चीन के पास 1500 से ज्यादा वायरस स्ट्रेन रखे हुए हैं। ये तथ्य इस लैब की साइट पर लिखे हुए हैं। वुहान लैब को चाइना सेंटर फॉर वायरस कल्चर कलेक्शन का घर भी कहा जाता है। इस परिसर में एशिया की पहली अधिकतम सुरक्षा प्रयोगशाला है जो BSL–4 स्तर के रोगजनकों (P–4) को संभालने के लिए सुसज्जित है। एक दूसरे के संक्रमण से फैलने वाले इबोला जैसे खतरनाक वायरस का भी ये केंद्र है। इसीलिए यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि कोविड–19 इसी लैब से ही लीक हुआ है और यह मानव निर्मित विषाणु है। यद्पि चीन ने इन आरोपों को निराधार बताया है और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना–19 को मानव निर्मित होने से इंकार किया है। वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वायरोलॉजी –WIV–के P–4 लैब को फ्रांस के बायो–इंडस्ट्रियल फर्म इंस्टिट्यूट मेरियुक्स और चीनी एकैडमी ऑफ साइंस ने मिलकर बनाया है। ये दुनिया के उन चंद लैब में से हैं जिन्हें क्लास 4 पैथोजेन्स यानी P–4 स्तर के वायरस के इस्तेमाल की इजाजत है। यहां उन खतरनाक वायरसों पर शोध होता है और टीके (वेक्सीन) बनाए जाते हैं जिनसे इंसान से इंसान में संक्रमण फैलने का सबसे ज्यादा खतरा रहता है।

वुहान की लैब को अमेरिकी मदद :–

इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वुहान की WIV लैब को अमेरिका द्वारा शोध कार्य के लिए आर्थिक मदद दी जाती रही है। ब्रिटेन के डेली मेल ने 'REVEALED' शीर्षक के साथ एक खबर प्रकाशित की है, इसमें उसमें तमाम कड़ियों को जोड़ने की कोशिश की है जो यह प्रमाणित करती है कि वुहान लैब को अमेरिकी सरकार ने 3.7 मिलियन डॉलर (करीब 28 करोड़ रुपए) की आर्थिक मदद दी गई। ताकि वो जानवरों पर अपनी रिसर्च जारी रख सके। बताया गया है कि यह फंडिंग पिछले 10 साल से चल रही थी, अर्थात् राष्ट्रपति ओबामा से लेकर राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल तक यह मदद जारी रही। क्यों न इन कृत्यों के लिए दोनों देशों को दोषी माना जाए। वास्तविकता तो यह है कि जनवरी–20 के आरम्भ में ही यह जानकारियां सामने आईं थी कि इंसानों में कोरोना का वायरस चमगादड़ से आया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी यह माना है कि ऐसे प्रमाण बता रहे हैं चमगादड़ ही कोरोना का संवाहक है। अब आरोप यह है कि वुहान की इसी लैब से कोरोना वायरस लीक हुआ और चीन से होता हुआ युन्नान प्रांत की ऐसी ही एक गुफा से चीनी वैज्ञानिकों ने उन चमगादड़ों को पकड़ा था, जिनसे कोरोना संक्रमण फैलने का दावा किया जा रहा है।

चीन के इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी के वैज्ञानिकों ने वुहान से करीब 1600 किलोमीटर दूर यून्नान प्रांत की एक अंधेरी गुफा से इन चमगादड़ों को पकड़ा था। वैज्ञानिक इन पर सूक्ष्मजीवों की मौजूदगी और उनके जीनोम को लेकर कई तरह के प्रयोग कर रहे थे। दरअसल, वायरोलॉजी विज्ञान की वह शाखा है

जिसमें प्रोटीन के खोज वाले सबमाइक्रोस्कोपिक, पैरासाइट और वायरसों कणों पर रिसर्च की जाती है।

अमेरिका सरकार की बॉयोमेडिकल और पब्लिक हेल्थ रिसर्च पर कार्य करने वाली संस्थान नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (NIH) द्वारा चीन की प्रयोगशालाओं को शोध कार्य के लिए फंडिंग की जाती रही है। वुहान के लैब की वेबसाइट पर NIH का नाम सहयोगी संस्थान के रूप में दर्शाया गया है। अमेरिकी NIH विगत एक दशक से वुहान की लैब को आर्थिक मदद कर रहा है। इस विषय में यद्दिप ट्रंप सरकार की अमेरिकी सांसदों और स्वतंत्र प्रेशर ग्रुप्स द्वारा इस प्रकार अमेरिकी फंड को खर्च किए जाने की आलोचना की जा रही है। अमेरिकी सांसद मैट गेट्ज ने तो इसे अफसोस जनक कहा है कि हम इतने वर्षों से वुहान की उस लैब को फंड कर रहे हैं, जहां जानवरों पर खतरनाक और क्रूरता से भरे प्रयोग हो रहे थे।

यद्दिप अमेरिका द्वारा चीन पर इस पूरे मामले को दबाने के आरोप लगाए थे, पर अब लग रहा है कि फंडिंग के कारण और कोरोना से अपने देश में हो रही तबाही से अमेरिका स्वयं भी सवालों में घिरा हुआ है। अमेरिकी समाचारपत्र वाशिंगटन पोस्ट्ट के अनुसार अमेरिकी दूतावास के अधिकारियों ने जनवरी 2018 में चेतावनी दी थी कि वुहान लैब में सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं हैं। उन्ह्होंने चमगादड़ों में पाए जाने वाले कोरोना वायरस पर बहुत खतरनाक रीसर्च कर रहे वैज्ञानिकों के बारे में सूचनाएं भी दी थीं। इस रिपोर्ट पर अमेरिका के जांइट चीफ ऑफ स्टाफ ने जनरल मार्क मिल्ले ने इस संबंध में कहा कि इसे आश्चर्य के साथ नहीं देखना चाहिए, हमने उसमें बहुत रुचि दिखाई थी। मैं अभी बस इतना कहूंगा कि यह रिपोर्ट अधूरी है। हालांकि साक्ष्य्यों को देखकर लग रहा है कि यह स्वाभाविक है।

चीन की चिनबू परम्परा और कोरोना वायरस :–

चीन की संस्कृति में खानपान और दक्षिण चीन की चिनबू परंपरा का कोरोना वायरस से गहरा संबंध है। चिनूब परंपरा में मान्यता है कि कुछ विशेष वन्यजीवों को खाने या उनके अंगों से बनी दवाइयों का सेवन करने से यौवन बना रहता है बुढ़ापा नहीं आता। चीन के वुहान शहर में जिंदा और मृत पालतू और जंगली जानवरों का बड़ा (लाइव एनीमल मार्केट) बाजार है। इस पशु बाजार में लोमड़ी, घड़ियाल, सांप, बिच्छू, ऑक्टोपस, कुत्ते, बिल्लियां, चमगादड़, बाघ के नाखून, भालू के पंजे, छिपकली की प्रजाति के बड़े जानवर और मंगोरिन, जिंदा और मृत, दोनों ही तरीके से बेचे जाते हैं। चीनी लोग बड़े चाव से यहां से इन जानवरों की या इनके मांस की खरीददारी करते हैं और कच्चा ताजा मांस खाते हैं। इतना ही नहीं चीनी लोग जानवरों का ताजा खून तक पी जाते हैं। जानवरों का खून गर्म और ज्यादा ताजा रहे, इसलिए मारने से पहले जानवरों का दौड़ाया जाता है, टॉर्चर किया जाता है ताकि भागदौड़ से खून गरम हो।

कोरोना वायरस और पैंगोलिन जानवर के संबंधों पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों ने अपने शोध में पाया है कि पैंगोलिन नामक जानवर में कोरोना वायरस मिलता–जुलता वायरस पाया जाता है। ये वायरस कोरोना से 95 फीसदी तक मेल खाता है। पैंगोलिन एक लुप्तप्राय वन्य जीव है जिसकी चीन सहित दुनियाभर में भारी मांग है। इसकी त्वचा का इस्तेमाल दवा बनाने के लिये होता है, वहीं इसका मांस यौवन संबंधी कारणों से खाया जाता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि कोरोना वायरस वैसे तो चमगादड़ में पाया जाता है लेकिन चमगादड़ की लीद जंगल में कहीं गिरी होगी जिसके संपर्क में पैंगोलिन आया और कोरोना वायरस से संक्रमित हो गया होगा। इसके बाद इसके संपर्क में आने वाले अन्य वन्यजीव संक्रमित हुये होंगे। जब इन जानवरों को वुहान के पशु बाजार में लाया गया होगा तो यहां के दुकानदार इस वायरस के संपर्क में आ गये। फिर यहीं से ये चीन के बाकी लोगों तक फैला। कहा तो ये भी जा रहा है कि एक लड़की ने चमगादड़ को ना केवल खाया बल्कि उसका सूप भी पिया था जिसकी वजह से वो कोरोना वायरस से संक्रमित हुई। क्योंकि इसके पूर्व सॉर्स और इबोला जैसे वायरस भी इसी प्रकार के वन्यजीवों के माध्यम से ही फैले थे।

चमगादड़–पेंगोलिन थ्योरी और शी की चेतावनी :–

आरम्भ में तो यह नजरअंदाज किया गया कि कोरोना का कैरियर कोई जानवर भी हो सकता है। परन्तु बाद में चीनी वैज्ञानिकों ने शंका व्यक्त की कि यह वायरस चमगादड़ से पेंगोलिन में पेंगोलिन से इंसान में फैला है। इसकी पुष्टि बाद में कोरोना वायरस के जीनोम पर दक्षिण चीन कृषि विश्वविद्यालय के शोधकर्ता शेन योंगी और जिओ लिहुआ द्वारा हुई शोध से हुआ कि वायरस पैंगोलिन से चमगादड़ और इससे इंसान में पहुंचा। इसे समझने के लिए 1 हजार जंगली जानवरों के सैंपल लिए। मरीजों से लिए गए सैंपल में मौजूद कोरोना वायरस और पैंगोलिन का जीनोम सीक्वेंस 99 फीसदी तक एक जैसा है।

प्रश्न यह भी पैदा होता है कि कोरोना के लिए चमगादड़ ही क्यों ? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज के अनुसार चमगादड़ और कोरोना के कनेक्शन पर वैज्ञानिकों का कहना है कि ये वायरस ऐसा होस्ट यानी वाहक पकड़ता है जो इसे तेजी से फैला सके। चूंकि चमगादड़ एकमात्र स्तनधारी उड़ने वाला जीव है और बड़ी संख्या में एक साथ रहता है। ऐसे में इस वायरस के लिए यह सबसे उपयुक्त वाहक है। रेबीज वायरस, मर्स वायरस और निपाह वायरस के वाहक के रूप में चमगादड़ की भूमिका पहले से संदिग्ध रही है।

दुनिया में वुहान की बैटवुमन के नाम से विख्यात शी झेंगली की चेतावनी से हमको कुछ सबक मिल सकता है। कोरोना वायरस के जीन सीक्वेंस (Gene Sequence) को दुनिया में सबसे पहले खोजने वाली चीनी वैज्ञानिक शी झेंगली जो इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी की प्रमुख वैज्ञानिक और निदेशक हैं और उन्हें श्वुहान की बैटवुमन (Batwoman of Wuhan) के नाम से जाना जाता है। शी झेंगली ने भविष्यवाणी की थी कि COVID–19 दुनियाभर में फैलेगा और कुछ साल बाद चमगादड़ों की वजह से फैलने वाला एक वायरस वैश्विक महामारी का स्वरूप ले लेगा। उनके सहकर्मियों ने चमगादड़ गुफाओं में जाकर शोध भी किए। शी ने प्रमुख चार बिन्दुओं को इंगित किया –

1. शी झेंगली ने अपने शोधपत्र में सचेत किया था कि SARS वायरस के प्रकोप ने सांस की गंभीर बीमारियों के एक से दूसरी प्रजातियों में फैलने के युग की शुरुआत कर दी है। भविष्य में सम्पूर्ण विश्व में इसका तेजी से प्रसार होगा और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका बुरा असर पड़ेगा। क्योंकि SARS - CoV को रोकने के लिए जनस्वास्थ्य उपाय पर्याप्त और सक्षम थे। लेकिन मेटागेनॉमिक्स अध्ययनों से पता चला है कि चीन के चमगादड़ों की बड़ी आबादी में सार्स जैसा ही दूसरा वायरस तेजी से फैल रहा है, जो भविष्य में भयंकर खतरा पैदा कर सकता है।

2. शी झेंगली ने इसी दौरान चमगादड़ों से फैले वायरसों के इतिहास पर एक टेड टॉक में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में फैले हेंड्रा के बारे में भी बताया था। हेंड्रा प्रकोप के दौरान शी ऑस्ट्रेलिया की सरकारी एजेंसी कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रीय रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (CSIRO) के लिए काम करती थीं। उन्ह्होंने चेतावनी दी थी कि चमगादड़ों की गुफाओं में सार्स जैसे कई वायरस मिले हैं और चमगादड़ों की आबादी वाले इलाकों के नजदीक पिग फार्म बनाने की लोगों को भारी कीमत चुकानी होगी। यद्यपि अब सार्स वापस नहीं लौटेगा। लेकिन, जो नए वायरस मिल रहे हैं, उनकी प्रकृति करीब–करीब सार्स जैसी ही है।

3. शी झेंगली ने चेताया था कि अगर हम अत्यधिक सतर्कता नहीं बरतेंगे तो हम सीधे संक्रमित होंगे

या किसी जानवर के जरिये वायरस हमें बीमार करेगा। आज की स्थिति में ये दोनों ही संभावनाएं काफी सटीक है। परन्तु किसी ने शी की बातों का कोई ध्यान नहीं दिया। परिणाम आज हमारे सामने हैं। दुनिया की बहुत बड़ी आबादी कोरोना वायरस से बचाव के लिए घरों में कैद होने को मजबूर है। विश्व में मेडिकल उपकरणों, दवाइयों के अलावा ज्यादातर कोरोबारी गतिविधियां थम गई हैं। बड़ी आबादी का रोजगार छिन चुका है और वैश्विक अर्थव्यवस्था चरमरा गई है।

4. शी झेंगली ने नेचर मैगजीन में एक लेख में लिखा था कि उन्होंने करीब 28 गुफाओं में जाकर चमगादड़ों का मल एकत्रित किया था। इसके बाद उन्होंने चमगादड़ के वायरसों का एक पूरा आर्काइव तैयार किया। उनके उस शोध में नोवेल कोरोना वायरस का भी जिक्र था, जो हॉर्सशू प्रजाति के चमगादड़ों में पाया गया था।

चीन में इस वायरस का संक्रमण फैलने के बाद प्रोफेसर शी और उनकी टीम ने मिलकर इसका बायोस्ट्रक्चर तैयार किया उसके आधार पर चीन में कोरोना वायरस बनने की प्रक्रिया भी शुरू हो सकी। वहीं, जब वुहान की लैब से कोरोना वायरस के फैलने के आरोप लगे तो इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी की प्रमुख वैज्ञानिक और निदेशक शी झेंगली ने कहा कि उनके लैब से संक्रमण नहीं फैला है। बता दें कि झेंगली को अमेरिकन एकेडमी ऑफ माइक्रोबॉयोलाजी की तरफ से फेलोशिप मिली है। यह भी स्पष्ट है कि अमेरिका और इजरायल उनकी ही लैब पर आरोप लगाए हैं।

क्या WIV सुरक्षित नहीं है ? :–

यह कहा जा रहा है कि वुहान की लैब से ही यह वायरस विश्व के राष्ट्रों में फैला। यह राष्ट्रों के लिए चिंता का विषय है कि क्या WIV सुरक्षित नहीं है। वहां सुरक्षा उपकरण अथवा आवश्यक सामग्री गुणवत्तापूर्ण नहीं है ? यदि अमेरिकी स्रोत और अमेरिकी असुरक्षा थ्योरी पर विश्वास करें तो स्थिति भिन्न नजर आती है।

अमेरिकी मान्यता है कि चीन स्थित अमेरिकी दूतावास के अधिकारियों ने वुहान लैब की सुरक्षा के विषय में जनवरी 2018 में अवगत कराया था कि लैब में कोरोना वायरस पर शोध से एक नए सरस–जैसी महामारी का खतरा हो सकता है। क्योंकि वुहान लैब में चमगादड़ों में पाए जाने वाले कोरोना वायरस पर बहुत खतरनाक शोध हो रहा है और यहां पर सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं हैं।

कोरोना के संक्रमण के सम्बंध में चीन ने बैट मार्केट की थ्योरी को फैलाया ताकि लैब पर लगने वाले आरोपों को दबाया जाए। परन्तु वुहान लैब के दस्तावेजों के अध्ययन से यह पता चलता है कि वुहान में जिस बैट मार्केट की पहचान कोरोना फैलने के रूप में की गई थी, वहां चमगादड़ बिकते ही नहीं थे। फिर ऐसा क्यों? अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कह चुके हैं कि हम यह पता लगाकर रहेंगे कि लैब से कोरोना वायरस दुर्घटनावश लोगों में फैला या जान बूझकर फैलाया। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पॉम्पियो भी कह चुके हैं कि चीन को बताना होगा कि वायरस कैसे फैला?

इसके अतरिक्त फॉक्स न्यूज के माध्यम से वुहान लैब के मूल सिद्धांत को बढ़ावा देने वाली एक रिपोर्ट आई। डोनाल्ड ट्रम्प ने पूछा था कि क्या वायरस बाजार के बजाय वुहान प्रयोगशाला में निकला है? वायरस का प्रकोप दिसंबर 2019 के अंत में सामने आया था जबकि आरम्भ में तो संक्रमण के मामलों को वुहान के एक खाद्य बाजार से जोड़ा गया था। परन्तु अभी इस प्रकार के कोई सबूत नहीं मिले हैं कि SARV-COV–2 वायरस के कारण होने वाली COVID–19 बीमारी की पहचान दिसंबर 2019 में चीन में की गई ?? विश्व स्वास्थ्य संगठन–WHO–द्वारा 11 मार्च 2020 को एक वैश्विक महामारी घोषित की गई और यह भी निर्देशित किया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) लड़ाई के खिलाफ संभावित शक्तिशाली उपकरण है COVID–19 महामारी।

30 अप्रैल–20 को अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया निदेशक कार्यालय ने एक बयान जारी कर कहा कि वायरस की उत्पत्ति के बारे में साजिश के सिद्धांतों के सबसे चरम को खारिज कर दिया गया कि यह एक जीवनी के रूप में कल्पना की गई थी। इसने कहा कि खुफिया समुदाय अभी भी जांच कर रहा था कि क्या प्रकोप ''संक्रमित जानवरों के संपर्क के माध्यम से शुरू हुआ था या यह वुहान में एक प्रयोगशाला में दुर्घटना का परिणाम था''। लेकिन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प उसी दिन पुनः रेखांकित किया क्या ऐसा लगता है कि WIV प्रकोप का स्रोत है। चीन ने ट्रम्प के विचार को खारिज करते हुए अमेरिका की प्रतिक्रिया की आलोचना की।

WIV में जैव सुरक्षा मानक :–

Biosafety level - BSL– पैथोजन संरक्षण के स्तर का एक सेट है biocontainment इसमें विभिन्न जैविक एजेंटों पर प्रयोग करने के लिए प्रयोगशालाओं में विभिन्न स्तर की सुरक्षा नियमन मानक स्थापित किया जाना। वर्त्तमान में biosafety level - BSL चार प्रकार के हैं जो BSL–1 स्तर से लेकर BSL–4 के उच्चतम स्तर तक है। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा जैव– प्रौद्योगिकीवाद और अन्य विकास कार्यों में बढ़ते हुए खतरों को देखते हुए रोग नियंत्रण और रोकथाम के लिए अटलांटा में global health research - CDC की स्थापना की। इसमें 60 देशों में 1300 स्थानीय कर्मचारियों के अलावा 300 विदेशी सार्वजनिक स्वास्थ्य पेशेवर कार्यरत् हैं। जो कई राष्ट्रीय स्वास्थ्य मंत्रालयों में या WHO के साथ जुड़े हुए हैं। वे सलाह और तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं। CDC द्वारा ही biosafety level - BSL स्तरों को निर्दिष्ट किया है।

अक्टूबर–07 में अमेरिकी सरकार के जवाबदेही कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राज्य भर में कुल 1,356 सीडीसी/यूएसडीए पंजीकृत बीएसएल–3 सुविधाओं की पहचान की गई थी। इनमें से लगभग 36% प्रयोगशालाएँ अकादमियों में स्थित हैं। अमेरिका में 2007 में संघीय प्रयोगशालाओं में नौ सहित 15 बीएसएल –4 सुविधाओं की पहचान की गई थी। वायरस और बैक्टीरियां का अध्ययन करने वाली प्रयोगशालाएं biosafety level - BSL, मानकों के रूप में जानी जाने वाली प्रणाली का पालन करती हैं, अर्थात् BSL का मतलब जैव सुरक्षा स्तर से हैं। जैव सुरक्षा के चार स्तर होते हैं, जो अध्ययन किए जा रहे जैविक पदार्थो (agents) के प्रकार और उन्हें अलग–थलग करने के लिए आवश्यक ध्यान एवं सुरक्षा संबंधी सावधानियों पर निर्भर करते हैं।

प्रयोगशालाओं की सुरक्षा के स्तर पदार्थ और पदार्थों पर की जाने वाली शोध के स्वरूप, प्रकृति पर निर्भर करता है।

वर्तमान में जैव सुरक्षा के चार स्तर है :–

जैव सुरक्षा स्तर–1 :– BSL –1, सामान्यतः अच्छी तरह से विशेषता वाले एजेंटों के साथ काम करने के लिए उपयुक्त है जो स्वस्थ मनुष्यों में बीमारी का कारण नहीं बनते हैं। प्रायः इन एजेंटों से प्रयोगशाला कर्मियों और पर्यावरण के लिए कम से कम खतरा होता है। इसमें संभावित संक्रमणों से बचाव के लिए ब्लीच या आइसोप्रोपैनोल को मिलाकर सफाई की जाती है।

जैव सुरक्षा स्तर – 2 :– BSL– 2 की सुरक्षा स्तर BSL –1 से अलग होता है। इसमें BSL–1 से कुछ अतिरिक्त सावधानियां बरती जाती हैं। शोधकर्ताओं को रोगजनक एजेंटों से निपटने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षत वैज्ञानिक ही लैब तक जाते हैं, दूषित वस्तुओं के साथ अत्यधिक सावधानी बरती जाती है। BSL–2 में जिन रोगाणुओं को शामिल किया गया है उनमें हेपेटाइटिस ए, बी और सी वायरस, मानव इम्यूनो वायरस (एचआईवी), के रोगजनक उपभेदों कोलाई, साल्मोनेला, प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम शामिल हैं।

जैव सुरक्षा स्तर 3 :– BSL–3 स्तर में विभिन्न प्रकार के रोगाणुओं से जुड़े हुए शोध किए जाते

हैं। इस लैब में साँस नली से संबंधित संभावित घातक बीमारियां होने की संभावना रहती है। BSL–3 स्तर की सुरक्षा में BSL–1 और BSL–2 में बरती जाने वाली सावधानियों के साथ– साथ अतिरिक्त सुरक्षा उपाय भी शामिल हैं। BSL–3 में सभी प्रयोगशाला कर्मियों को चिकित्सा निगरानी प्रदान की जाती है और आकस्मिक या बिना किसी संक्रमण के जोखिम को कम करने के लिए प्रासंगिक टीकाकरण किया जाता है। शोधकर्ताओं को जैविक सुरक्षा कैबिनेट पहनना जरूरी है और जो प्रयोगशाला के बाहर नहीं पहना जा सकता है। प्रयोगशाला में –विशिष्ट जैव सुरक्षा मैनुअल का अनुपालन करना जरूरी होता है।

BSL–3 का उपयोग आमतौर पर विभिन्न रोगाणुओं को शामिल करने वाले अनुसंधान और नैदानिक कार्यों के लिए किया जाता है जो कि एरोसोल और/या गंभीर बीमारी द्वारा प्रेषित हो सकते हैं।

बायोसेफ्टी स्तर 3 का उपयोग आमतौर पर विभिन्न रोगाणुओं को शामिल करने वाले अनुसंधान और नैदानिक कार्यों के लिए किया जाता है जो कि एरोसोल और/या गंभीर बीमारी द्वारा प्रेषित हो सकते हैं। इनमें शामील हैं– Francisella tularensis , माइकोबैक्टीरियम क्षयरोग, क्लैमाइडिया psittaci, वेनेजुएला इक्वाइन इन्सेफेलाइटिस वायरस, पूर्वी इक्वाइन इन्सेफेलाइटिस वायरस, सार्स कोरोना वाइरस, सार्स–Cov –2 , एमईआरएस कोरोना, Coxiella burnetii, रिफ्ट वैली बुखार वायरस, रिकेटसिआ rickettsii, की कई प्रजातियों ब्रूसिला, चिकनगुनिया, पीला बुखार वायरस, वेस्ट नाइल वायरस, यर्सिनिया पेस्टिस।

जैव सुरक्षा स्तर 4 :– BSL–4 प्रयोगशालाएँ आमतौर पर कैबिनेट प्रयोगशालाएँ या सुरक्षात्मक–सूट प्रयोगशालाएँ होती हैं। कैबिनेट प्रयोगशालाओं में, सभी काम तृतीय श्रेणी के जैव सुरक्षा कैबिनेट के भीतर होते हैं। प्रयोगशाला से बाहर निकलने पर कर्मियों को परिशोधन के लिए एक रासायनिक बौछार से गुजरना होता है फिर सकारात्मक दबाव वाले सूट को हटाने के लिए एक कमरा, उसके बाद एक व्यक्तिगत स्नान करना होता है। प्रयोगशाला में प्रवेश प्रशिक्षित और अधिकृत व्यक्तियों तक ही सीमित है।

जैव सुरक्षा स्तर –4 प्रयोगशालाओं का उपयोग नैदानिक कार्य अर्थात् ((अनुसंधान के माध्यम से विकसित नई चिकित्सा पद्धतियों के सामान्य प्रयोग से पूर्व इनके प्रभाव व कुप्रभावों का अध्ययन करने के लिये किया गया शोध नैदानिक परीक्षण (क्लिनिकल ट्रायल) कहलाता है। चिकित्सा पद्धतियों के अन्तर्गत टीका, दवा, आहार संबंधी विकल्प, आहार की खुराक, चिकित्सीय उपकरण, जैव चिकित्सा आदि आते हैं।)) एवं आसानी से प्रसारित रोगजनकों पर अनुसंधान के लिए किया जाता है जो घातक बीमारी का कारण बन सकते हैं। BSL–4 में वायरल रक्तस्रावी बुखार जैसे कि मारबर्ग वायरस, इबोला वायरस, लास वायरल और क्रीमियन–कांगो रक्तस्रावी बुखार के कारण जाने जाने वाले वायरस शामिल हैं। अन्य रोगजनक वायरस जैसे हेंड्रा वायरस, निप्पा वायरस और कुछ फ्लेविविरस पर भी शोध होता हैं। इसके अतिरिक्त, खराब रोगजनकों के लक्षण जो खतरनाक रोगजनकों के साथ निकटता से संबंधित दिखाई देते हैं। BSL–4 स्तर का उपयोग वैरियोला वायरस, चेचक के प्रेरक एजेंट के साथ काम करने के लिए भी किया जाता है, यद्यपि यह कार्य केवल अटलांटा, संयुक्त राज्य अमेरिका के स्टेट रिसर्च सेंटर ऑफ वायरोलॉजी एंड बायोटेक्नोलॉजी में रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों में किया जाता है।

मोदी की अंतरराष्ट्रीय कोरोना नीति :–

विश्व राजनीति की ऐसी स्थिति में भारत की भूमिका विश्व के सभी राष्ट्रों से पृथक है। भारत ने न किसी को दोषी बनाया, न किसी पर आक्रोश व्यक्त किया, न किसी का प्रतिस्पर्धी बना और ना ही किसी से किसी की शिकायत की। अपितु इस विषम दौर में भारत ने धैर्य, संयम, विश्वास और दृढ़तापूर्वक परिस्तिथियों का सामना करने, उन्हें पराजित करने की नीति को अपनाया। व्यक्ति का जीवन प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इन सिद्धान्तो को प्रतिपादित किया। जीवन है तो संसार है का मूल मंत्र दिया। सर्वेभवन्तु सुखिनः के जीवन दर्शन को चरितार्थ किया। समस्त भारतीयों के मनोबल को उच्चस्तरीय बनाया। दूसरों पर दोषारोपण करने की अपेक्षा स्वयं में आत्मविश्वास कैसे दृढ़ बना रहे, आत्मानुशासन कैसे नियंत्रणकर्ता बने इन नीतियों से भारतवंशियों को आत्मसात कराया और विश्व के सभी राष्ट्रों को इस

संकट के समय का परस्पर एक दूसरे के साथ मिलकर निदान निकालने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्वयं दुःखी होते हुए भी दूसरों को दुःख से उभरने की दिशा में विभिन्न प्रकार की मदद प्रदाय की। परस्पर सहयोग और सौहार्द्र रखते हुए कोरोना वायरस के रक्तबीज को आमूल नष्ट करने, जड़ से समाप्त करने की नीति का अनुकरण किया है और विश्व के शेष राष्ट्रों को भी भारत की नीति पर विचार कर इन विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने का आव्हान किया। यही विश्व नेतृत्वकर्ता का व्यपक स्वरूप है।

भारत की अंतर्राष्ट्रीय नीति और प्रधानमंत्री मोदी जी की सोच में भारतीय परम्पराओं और संस्कारों का व्यवहारिक स्वरूप दिखाई देता है। संकट के इस दौर में भारत सभी राष्ट्रों को एकसाथ लेकर चल रहा है। भारत स्वयं के साथ– साथ सम्पूर्ण मानवता के लिए भी विचार कर रहा है। क्योंकि कोरोना वायरस संक्रमण का समाधन कोई एक अकेला राष्ट्र नहीं कर सकता। इसके लिए तो सामूहिक प्रयास ही सार्थक होंगे। हमारे परस्पर कितने भी वैचारिक मतभेद हों, आर्थिक और व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता हो, हमें एक–दूसरे राष्ट्र की मदद करनी होगी। प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस दिशा में अनुपम एवं अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने कोरोना की गम्भीरता को समझते हुए अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग की दिशा और दशा को कोरोना महामारी केंद्रित बनाने के लिए त्वरित और सघन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को नया आयाम दिया। समूह के स्तर पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से SAARC राष्ट्रों की बैठक आहूत की, रणनीति बनाई, SAARC कोरोना फण्ड का गठन किया। G–8 समूह के राष्ट्रों से मंत्रणा की। कोरोना वायरस के वैश्विक संक्रमण से उत्पन्न खतरों को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित गुट निरपेक्ष (NAM) देशों के वर्चुअल सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी जी भारत की सहयोग नीति के कार्यों को बताते हुए स्पष्ट किया कि भारत ने दुनिया के 123 देशों में मेडिकल सप्लाई सुनिश्चित कराई है जिनमें 59 गुट निरपेक्ष राष्ट्र भी शामिल हैं।

द्विपक्षीय स्तर पर भारत ने कोरोना संकट से जूझ रहे राष्ट्रों को विदेशी मदद की गति बढ़ाई। भारत ने 55 देशों को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा भेजी है। इनमें प्रमुख रूप से अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, ओमान, यूएई और नीरदलैंड जैसे देश शामिल हैं। भारत द्वारा अमेरिका को हाइड्रॉऑक्सी क्लोरोक्वीन की 35 लाख 82 हजार गोलियों और इसके उत्पादन के लिए नौ मीट्रिक टन आवश्यक औषधियों के निर्यात को मंजूरी दी थी। ब्रिटेन को पैरासिटामोल के तीस लाख पैकेट की आपूर्ति की गई। भारत ने ब्राजील को हैड्रोक्लोरोक्विन दवाइयां देकर मदद मैत्री धर्म का परिचय दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने मोदी को सच्चा मित्र कहा, ब्रिटेन ने आभार व्यक्त किया और ब्राजीली राष्ट्रपति जेर बोलसोनारो ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा की गई मदद की तुलना हनुमान द्वारा लाई गई संजीवनी से की है।

इसके अलावा अन्य खाड़ी देशों को भी भारत ने चिकित्सा सहायता हेतु सेवानिवृत्त सेना डॉक्टरों, नर्सों और तकनीशियनों को यूएई और कुवैत की यात्रा शुरू करने की अनुमति प्रदान की गई। भारत की कुवैत को मदद पहुंचाने की तैयारी है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने ओमान के सुल्तान व स्वीडन के प्रधानमंत्री से बात की और उन्हें भी औषधियों की मदद की, विशेषतः हाड्रोक्लोरोक्विन की हरसंभव मदद आपूर्ति करने का विश्वास दिलाया।

भारत द्वारा कोरोना महामारी से निपटने में अपने पड़ोसी देशों की मदद करने के लिए भारत रैपिड रिस्पोंस टीम (Rapid Response Team) तैयार की है। इस दल में भारत द्वारा बांग्लादेश (Bangladesh), भूटान (Bhutan), श्रीलंका (Sri Lanka) और अफगानिस्तान (Afghanistan) के लिए अलग–अलग रैपिड रिस्पोंस टीम तैयार की गई। भारत की ओर से मालदीव में कोरोना टेस्टिंग लैबोरेट्री बनाने और चिकित्सा कर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिए 14 सदस्यों की एक रैपिड रिस्पोंस टीम वहां गई थी। श्रीलंका को 10 टन चिकित्सकीय सामग्री पहुंचाई गई। मालदीव को तीन माह की चिकित्सीय सामग्री दी जा चुकी हैं। भारत ने नेपाल को लगभग 23 टन आवश्यक दवाइयों की आपूर्ति की है। श्रीलंका को 10 लाख और मालदीव को 2 लाख हैड्रोक्लोरोक्विन की गोलियों की सप्लाई की है। कुवैत में कोरोना पीड़ितों के इलाज

और चिकित्सा देखभाल के लिये भारत ने 15 डॉक्टरों और चिकित्सा सेवकों का एक दल भेजा। भारत ने अफगानिस्तान को श्हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन की 5 लाख टैबलेट, पैरासिटामॉल की एक लाख टैबलेट और 75,000 मीट्रिक टन गेहूं भेजने का निर्णय किया। इस तरह भारत एक परिपक्व और व्यापक सोच, सकारात्मक दृष्टि सम्पन्न राष्ट्र नेतृत्वकर्ता की भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

निष्कर्ष :–

निःसंदेह यह दुःख और विपत्तियों की परीक्षा का कालखण्ड है। अकेले रहने की कला में ही जीवन का सत्य निहित है। यह कला तो सीखनी ही होगी ? अपने साथ, अपने मन के साथ, अपनी भावनाओं के साथ–साथ, इतना ही नहीं आत्म विशेषण भी करना होगा? आत्मानुशासन के साथ नैतिक उत्तरदायित्वों के साथ जीवन में सुखमय जीवन कैसे जिया जाता है और जीवन को एकाकी वृत्त में आनन्दमयी कैसे बनाया जा सकता है ये जीवन की वास्तविक अनुभूतियों के चित्रण और चरित्र को परिभाषित करेगा? यही अनुभूतियों में निहित जीवन बोध और जीवन के यथार्थ भोग में व्यक्ति को परिशुद्ध और पवित्र बना सकता है। साथ ही वास्तविक जीवन और ज्ञान की विविध धाराओं की सामर्थ्य को आत्मसात कर सकता है। यदि हम चाहें ?

संदर्भ सूची :–

1. *http://nopr.niscair.res.in/bitstream/123456789/45220/1/VP%2066-67%289%29%20 32-34.pdf*
2. *http://ajhindidaily.com/EPaper/Agra/13-Aug-2017/13%20Augu%208.pdf*
3. *https://www.iitk.ac.in/new/data/Antas/antas2014-5.pdf*
4. *http://old.nios.ac.in/aep/hindi/article_HEPATITIS.pdf*
5. *http://www.mpkrishi.org/EngDocs/AgriTop/e-agrotech/Kharif/Cotton.aspx*
6. *https://www.icmr.nic.in/sites/default/files/annual_repoorts/AR_Hindi.pdf*
7. *http://hslsa.gov.in/sites/default/files/documents/29.pdf*

****